International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(6): 138-140

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(6): 138-140
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 23-09-2017
Accepted: 24-10-2017

डा. सुकुंज शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर,
विवेकानन्द महाविद्यालय,दरबाड़ा,
चाँदपुर, जिला बिजनौर, उत्तर प्रदेश,
भारत

Correspondence
डा. सुकुंज शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर,
विवेकानन्द महाविद्यालय,दरबाड़ा,
चाँदपुर, जिला बिजनौर, उत्तर प्रदेश,
भारत

महाकवि भवभूति के रूपकों में नाट्यशास्त्र पर आधृत सूच्यकथांश

डा. सुकुंज शर्मा

प्रस्तावना
अभिनय की दृष्टि से कथावस्तु के–'अभिनय व सूच्य' नामक दो भेद हैं। जिन घटनाओं का सबके सामने अभिनय किया जाए वे 'अभिनेय' एवं जिनकी सूचना मात्रा दी जाए उन्हें 'सूच्य' कहा जाता है। सूच्य घटनाओं की सूचना देने हेतु भरतमुनि ने पाँच अर्थोपक्षेपक' माने हैं,[1]जो इस प्रकार हैं–

नाट्य सिद्धांत
(क) विष्कम्भक
भरतमुनि ने कहा है कि मध्य श्रेणी के पुरुषों के द्वारा विनियोग करने के लायक केवल नाटक की मुखसन्धि में जिसका संचार हो ऐसे विष्कम्भक को पुरोहित, अमात्य एवं कंचुकीयों को कहना चाहिए।[2]भरतमुनि ने विष्कम्भक के दो भेद किये हैं–[3]

शुद्ध –जिनमें मध्यम पात्रों से सम्पादन कराया जाता है, वह 'शुद्ध विष्कम्भक' है।[4]

संकीर्ण –जो नीच एवं अधम पात्रों द्वारा जो सम्पादित किया जाए, उसे भरत ने 'संकीर्ण विष्कम्भक' माना है।[5]

(ख) प्रवेशक
प्रवेशक का लक्षण प्रस्तुत करते हुए भरतमुनि कहते हैं, प्रकरण और नाटक में उपात्त अर्थप्रकृति बिन्दु के प्रयोजन के सम्बन्ध में जो अंकान्तर के अनुसार संक्षेप है, वह प्रवेशक है।[6]तथा जिस नाटक एवं प्रकरण में अङ्क में नायक सन्निहित हो तथा जहाँ परिजन की कथा का अनुबन्ध हो वह प्रवेशक है, ऐसा जानना चाहिए।[7]

(ग) चूलिका
यवनिका पर्दे के भीतर स्थित सूतादि पात्रों के द्वारा जो अनेक प्रकार से अर्थों का उपक्षेपण करे, वह चूलिका है, ऐसा आचार्य भरत मानते हैं।[8]

(घ) अङ्कावतार
अङ्कावतार के विषय में भरत कहते हैं कि–जहाँ अंक के अन्त में ही प्रयोग के अनुसार बीज भूत अर्थ की युक्ति से युक्त अङ्क का निपतन होता है, उसको अङ्कावतार कहा जाता है।[9]

(ङ) अङ्कमुख
स्त्री, पुरुष के द्वारा जहाँ पूर्व में अंक के विष्लिष्ट मुख का उपक्षेप किया जाता है, वह ' अङ्कमुख' होता है।[10] इसे अङ्कास्य नाम से भी जाना जाता है।

भवभूति के रूपकों में सूच्यकथांश
1.मालतीमाधव में सूच्यकथांश
भवभूति ने मालतीमाधव में सूच्यकथाशों का प्रयोग बड़े ही अच्छे ढ़ंग से किया है। इन पांच सूच्यकथाशों का एक–एक उदाहरण दृष्टव्य है।

(क) विष्कम्भक; शुद्ध
भवभूति ने 'शुद्ध विष्कम्भक' को कपालकुण्डला के माध्यम से पूर्ण कराया है। विष्कम्भक में कपालकुण्डला आने वाले घटनाक्रमों का परिचय कराती है।

वह बताती है कि उसके गुरु अघोरघण्ट ने सुन्दरी की बलि देने का निर्णय किया है। तथा उसी के माध्यम से माधव द्वारा नरमांस विक्रय के लिए वन में आने की सूचना प्राप्त होती है– '' षडधिकदशनाडीचक्रमध्य– स्थितात्मा हृदि विनिहितरूपः ... ... प्रारम्भेऽपि त्रियामा तरुणयति निजं नीलिमानं वनेषु।।''[11]

(ख) प्रवेशक

बुद्धरक्षिता कामन्दकी के विषय में अवलोकिता से पूछती है कि वह कहाँ हैं? इस पर अवलोकिता उसे बताती है कि भगवती का अधिकतर समय मालती के अनुसरण में ही व्यतीत होता है। अवलोकिता यह भी बताती है कि भगवती ने उसे माधव के समीप शिव मन्दिर से सम्बद्ध कुसुमाकर के उद्यान में जाकर लता आदि से आच्छादित स्थान के मध्य भाग में लाल अशोक वन में ठहरने के लिए कहा है, जहाँ माधव पहले से ही उपस्थित हैं।

तदन्तर बुद्धरक्षिता माधव को उद्यान में भेजे जाने का कारण पूछती है। तब अवलोकिता उत्तर देती है कि कृष्णपक्ष की चतुर्दशी होने के कारण आज मालती अपनी माता के साथ वहाँ जायेगी और इस प्रकार कामन्दकी वहाँ दोनों को परस्पर दर्शन करायेगी। तब बुद्धरक्षिता यह भी बताती है कि उसने भी मदयन्तिका के मन में मकरन्द को देखने की लालसा प्रकट कर दी है। इस प्रकार बुद्धरक्षिता एवं अवलोकिता के परस्पर वार्तालाप– ''अवलोकिते, अपि जानासि. एहि गच्छावः।''[12] इत्यादि प्रवेशक का लक्षण है।

(ग) चूलिका

नेपथ्य से दुष्ट व्याघ्र के–''रे रे शंकरपुर ... ... जीवितमिति।''[13]अर्थात् अरे! शंकर मन्दिर में प्रवेश करने वालों यह अत्यन्त भयङ्कर व्याघ्र क्रुध होकर काल के समान आचरण कर रहा है। इसने अपनी नई जवानी के जोर के मारे अतीव क्रोध से उन्मत्त होकर लोहे के फाटक को खोल दिया है। तथा बन्धन–गृह से बाहर निकल कर इसने अनेक प्राणियों को ग्रास बना लिया है, तथा इसके डर से सभी व्याकुल होकर अपनी प्राण रक्षा के लिए इधर–उधर दौड़ रहे है, अतः सभी लोग भाग–कर यथाशक्ति अपने–अपने प्राणों की रक्षा करों। ऐसा कहकर आने की सूचना दी जाती है। यही 'चूलिका' है।

(घ) अङ्कावतार

मालतीमाधव में अङ्कावतार का प्रयोग प्रथम अङ्क के अन्त में–'' अभिहन्ति ... ... कामन्दकी नः शरणम्।''[14] अर्थात् जिस प्रकार से वात, पित्तादि विकार से उत्पन्न भीषण ज्वर गजशावक को अत्यधिक पीड़ित करता है। उसी प्रकार अति कठिनाई से निवारण योग्य यह काम सुकुमार शरीर वाले माधव को पीड़ित कर रहा है। अतः भगवती कामन्दकी ही हम लोगों की रक्षा करने वाली हैं। मकरन्द द्वारा ऐसा कहने पर हुआ है।यह वाक्य आगामी अंक की वस्तु की सूचना देता है।

(घ) अङ्कमुख

यहाँ कामन्दकी एवं अवलोकिता के वार्तालाप से ज्ञात होता है कि मालती व माधव का परिणय उनके पिता द्वारा बचपन में ही कर दिया गया है। और मालती व माधव के विवाह योग्य होने पर मालती के पिता भूरिवसु ने अपना निर्णय बदलकर अपनी पुत्री का विवाह अपने अंतरंग सहचर नन्दर से करने का विचार किया है। परन्तु फिर भी कामन्दकी द्वारा मालती व माधव के हृदयों में एक दूसरे के प्रति आसक्ति का बीज बो दिया गया है। और इस प्रकार मालती अपने भवन की छत से माधव को आता जाता देखकर उत्कण्ठित होती है। अतः मालतीमाधवके पहले अङ्क में कामन्दकी एवं अवलोकिता के ''यन्मां विधयेविषये ... ... गाढोत्कण्ठा लुलितलुलितैरङ्कैस्ताम्यतीति।।''[15] इस वार्तालाप के माध्यम से 'अङ्कमुख' का उदाहरण दृष्टिगोचर होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि महाकवि भवभूति ने अपने नाटक मालतीमाधव में सूच्य वस्तु के सभी भेदों का प्रयोग कर कथावस्तु को जीवंतता प्रदान की है। क्योंकि नाट्यकला जीवनकला का ही प्रर्याय है। जीवनकला की सपफल अनुकृति ही नाट्यकृति मानी जाती है। उसमें भी कथातत्त्व की रमणीयता, व्यापकता तथा गतिशीलता पर ही नाटक का महत्त्व, माधुर्य एवं सौन्दर्य अवलम्बित रहता है। कथानक के ही कंकाल में कवि अपनी अन्तश्चेतना की समस्त उपलब्धियाँ संधान करता है तथा अपनी चिरन्तन कल्पना कला के द्वारा उसमें जीवन का संचार करता है। इस दृष्टि से महाकवि ने मालतीमाधव का रचना द्वारा कथानक को जीवंतता प्रदान की है।

2. महावीरचरित में सूच्यकथांश

महावीरचरित में भी कवि ने उचित स्थान पर यथासमय सूच्यकथांशों का प्रयोग किया है–

(क) विष्कम्भक

महावीरचरित के पांचवें अङ्क में शुद्ध विष्कम्भक का प्रयोग हुआ है। दूसरे, चौथे, छठें एवं सातवें अङ्क में मिश्र विष्कम्भक का प्रयोग हुआ है। महावीरचरित में पांचवें अङ्क के शुद्ध विष्कम्भक में सम्पाति एवं जटायु द्वारा राम एवं लक्ष्मण के वीरतापूर्वक कार्यो से जुड़ी भूतकाल की घटनाओं की सूचना दी जाती है। '' सम्पातिः– नूनमद्या वत्सो जटायुरभिवादनाय मलयकंदरकुलायमुपासीदति। तथा हि .... रङ्गेः खण्डितकंधरा धमनिभिः श्येनीसुतस्तृप्यतु।।''[16]

(ख) चूलिका

नेपथ्य में श्रीरामचन्द्र जी को जृम्भकास्त्र की प्राप्ति की सूचना दी जाती है। श्रीराम विश्वामित्र के समक्ष प्रणाम करने के उपरान्त दिव्यास्त्रों की परम्परा को लक्ष्मण के साथ प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करते हैं– ''एष प्रह्वोऽस्मि सहास्तु मे।।''[17]यही चूलिका है।

(ग) अङ्कावतार

महावीरचरित के तृतीय अङ्क का प्रारम्भ अ अङ्कावतार नामक अर्थोपक्षेप द्वारा हुआ है। इस अङ्क में वे ही पात्र वशिष्ठ, विश्वामित्र, परशुराम, शतानन्द हैं जो, द्वितीय अङ्क में प्रवेश करते है–'' ततः प्रविशत उपविष्टौ वसिष्ठविश्वामित्रौ जामदग्न्यशतानन्दौ च ''[18]

(घ) अङ्कमुख

दूसरे अङ्क के अन्त में सुमन्त्र, राम एवं परशुराम को यह संदेश देना– ''भगवन्तौ ... समार्गवानाह्वयतः।''[19] अर्थात् महाराज वशिष्ठ तथा विश्वामित्र परशुरामजी के साथ आप लोगों को बुला रहे हैं। यही अङ्कमुख नामक 'सूच्यकथांश को दर्शाता है।

इस प्रकार निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि भवभूति ने अपने नाटक महावीरचरित में कथावस्तु के सूच्य अङ्कों का–जिन्हें 'अर्थोपक्षेप' भी कहा जाता है का प्रयोग सपफलतापूर्वक किया है तथा नाटक की परम्परा का निर्वाह भी किया है।

3. उत्तररामचरित में सूच्यकथांश

सात अङ्कों में निबद्ध उत्तररामचरित भवभूति की ऐसी कृति है; जिसमें उनके नाट्यशास्त्र–विषयक कौशल के दर्शन होते हैं। अपने दोनों नाटकों की भांति ही कवि ने उत्तररामचरित में भी सूच्यकथांशों का सुन्दरता से प्रयोग किया है। जो इस प्रकार है–

(क) शुद्ध विष्कम्भक

उत्तररामचरित के तृतीय अङ्क का आरम्भ भवभूति ने तमसा और मुरला के संवाद के माध्यम से शुद्ध विष्कम्भक द्वारा प्रतिपादित किया है।

तमसा व मुरला अपने वार्तालाप में आने वाले घटना–चक्र पर प्रकाश डालती हैं। उनके वार्तालाप से पता चलता है कि राम पञ्चवटी में आ रहें हैं और लोपामुद्रा ने गोदावरी से यह कहलाया है कि राम पञ्चवटी में सीता के साथ बिताये हुए क्षणों को यादकर अत्यन्त व्याकुल होगे तो उनके अनिष्ट की आशंका है, अतः सीता को वहीं उपस्थित रहना चाहिए। व गोदावरी के प्रभाव से सीता वहाँ अदृश्य रुप में रहेंगी। उन्हें मनुष्य तो क्या देवता भी नहीं देख सकते। "एका–सखि मुरले! किमसि सम्भ्रान्तेव? ... ...ग्लपयति परिपाण्डु क्षाममस्याः शरीरं, शरदिज इव धर्मः केतकीगर्भपत्रम्।।"[20]

(ख) चूलिका

कवि ने 'चूलिका' का प्रयोग सीता द्वारा पाले गये हाथी के बच्चों को दूसरे गर्वीले हाथी द्वारा दबाये जाने की सूचना देने के समय किया है। नेपथ्य में आवाज आती है कि पहले सीता ने जिस चञ्चल हाथी के बच्चे को अपने हाथ से 'सल्लकी' लता के कोमल पत्ते दे–देकर हृष्ट–पुष्ट किया था– सीता बीच में ही भयपूर्वक कहती हैं कि उसका क्या हुआ?

तब फिर नेपथ्य से ही पुनः स्वर सुनाई देता है कि वह अपनी पत्नी के साथ जल में विहार करता हुआ किसी दूसरे गर्वीले गजराज द्वारा बल–पूर्वक दबाया जा रहा है ''सीतादेव्या स्वकरकलितैः सल्लकीपल्लवाग्रै ... ... दुद्दाामेन द्विरदपतिना सन्निपत्याभियुक्तः।।''[21]

(ग) अङ्कावतार

उत्तररामचरित में केवल द्वितीय एवं तृतीय अङ्क के बीच में ही अङ्कावतार का प्रयोग किया है– ''उत्तालास्त इमे गम्भीरपयसः पुण्याः सरित्सङ्गमा'' द्वारा द्वितीय अङ्क को समाप्त कर तृतीय अङ्क का आरम्भ– ''ततः प्रविशति नदीद्वयम्'' से किया गया है। इस प्रकार द्वितीय अङ्क का घटनाक्रम तृतीय अङ्क में अविच्छिन्न बना रहता है।[22]

इस प्रकार 'उत्तररामचरित' में सूच्य कथावस्तु का प्रयोग महाकवि भूवभति ने पूर्ण सार्थकता के साथ किया है। इसमें सूच्यकथांशों के प्रयोग से कथा की प्रगति तथा पूर्ण प्रवाह में कमनीयता एवं सुन्दरता की सृष्टि हुई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. न0शा0, 19/110
2. ना0शा0, 19/111
3. ना0शा0, 19/112
4. ना0शा0, 19/112
5. ना0शा0, 19/112
6. ना0शा0, 19/114
7. ना0शा0, 18/28
8. ना0शा0, 19/113
9. ना0शा0, 19/115
10. ना0शा0, 19/116
11. मा0मा0, 5/1–6
12. मा0मा0, पृ0 51–53
13. मा0मा0, पृ0 66–67
14. मा0मा0, 1/40
15. मा0मा0, 1/10–16
16. म0च0, पृ0 111–117
17. म0च0, 1/47
18. म0च0, पृ0 60
19. म0च0, पृ0 59
20. उ0च0, पृ0 185–194
21. उ0च0, 3/6
22. उ0च0, 2/30, पृ0 185